जोड़ में शामिल हो जाते हैं। यह जोड़ मनुष्य का स्वभाव, उसके जीवन की दशा का रूप धारण कर लेता है। पहले इन कर्मों का स्थान मनुष्य का मस्तिष्क होता है जिसपर संस्कारों के रूप में कर्मों का हिसाब-किताब होता रहता है, उसके बाद कर्म या संस्कार अलग-अलग न रहकर बीज-रूप में मनुष्य के सूक्ष्म-शरीर में चले जाते हैं। यह सूक्ष्म-शरीर अलग-अलग कर्मों का लेखा जोखा ढोने के बजाय सब कर्मों को संस्कारों के रूप में जन्म-जन्मान्तर तक, लिए रहता है। इस सूक्ष्म-शरीर को शास्त्रों में कारण-शरीर भी कहा गया है। कारण-शरीर इसलिए कहा है क्योंकि आगे जो कुछ बनना है उसका ये संस्कार ही कारण हैं।

वैदिक संस्कृति का कहना है कि आत्मा के सूक्ष्म-शरीर में अर्थात्, संस्कारों के शरीर में, जन्म धारण कर लेने के बाद तो संस्कार डलते रहते हैं, जन्म लेने से पहले भी - जब वह माता के पेट में होता है तब भी नये संस्कार डाले जा सकते हैं। कारण शरीर में जो संस्कार पड़ जाएंगे, चाहे पुराने चले आ रहे हों, चाहे नये पड़े हों, वे एक तरह के बीज होंगे, जो इस जन्म में फूटेंगे। नये संस्कारों द्वारा ही पुराने संस्कारों को बदला जा सकता है। तब आत्मा के एक-एक कर्म की छान-बीन की आवश्यकता नहीं रहती, क्योंकि जन्म-जन्मान्तर के कर्मों का निचोड़ ही तो संस्कार हैं। संस्कार में एक कर्म नहीं अनेक कर्मों का जोड़ मिला रहता है, उस जोड़ के भुगतने में ही सब कर्म भुगत जाते है। पेड़ की टहनियों तक रस पहुँचाने के लिए एक-एक टहनी में रस डालने की आवश्यकता नहीं होती, उसकी जड़ में रस डालने से टहनी-टहनी (ब्रान्चस में), पत्ते-पत्ते में रस पहुँच जाता है। संस्कारों को पकड़ने से कर्म-रूपी वृक्ष की एक-एक टहनी, उसका एक-एक पत्ता, रेशा-रेशा हाथ आ जाता है।

एक-एक कर्म से उलझने की आवश्यकता नहीं रहती, एक-एक टहनी को पकड़ने की आवश्यकता नहीं रहती। इस प्रकार कर्मों की जटिल समस्या को संस्कारों द्वारा हल करने का वैदिक संस्कृति ने प्रयत्न किया था और मानव के नव-निर्माण के विचार को जन्म दिया था। वैदिक संस्कृति के सोलह संस्कार मानव के नव-निर्माण का एक मात्र उत्तम साधन है।

- बाकी अगले अंक में -

विवाह संस्कार सम्बन्धित वैदिक पुरोहित मण्डल का निर्णय।
विषय - परछन

ऋषि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित संस्कार विधि के अनुसार विवाह संस्कार प्रकरण में परछन का उल्लेख लेश मात्र भी नहीं है। स्वामी दयानन्द का कहना है कि वर वधू के घर (मण्डप) में प्रवेश करके पूर्वाभिमुख (Facing East) खड़ा रहे और वध तथा कार्यकर्ता (पुरोहित) वर के समीप उत्तरभिमुख (Facing North) खड़े रहके वधू और कार्यकर्ता (पुरोहित) इस वाक्य को बोलें:-

ओं साधु भवानास्तामर्चयिष्यामो भवन्तम्।

अर्थः कन्या कहती है, श्रीमान्! (वर को) आप अच्छे प्रकार बैठिए। आपकी हम सत्कार करते हैं।

तथा वर कहता है:- **ओम् अर्चय** अर्थात् मुझे स्वीकार है।

इस विधि से साफ प्रमाणित है कि वर का स्वागत केवल कन्या ही करती है। उस दिन कन्या के लिये वर मुख्य मेहमान हैं जो कि कन्या का वरण करने आया है। वैदिक शिष्टाचार के अनुसार यही उचित है कि विशेष व्यक्ति का स्वागत, कोई विशेष व्यक्ति ही करे। विवाह के शुभ अवसर पर वर विशेष व्यक्ति होता है।

अगर उनका स्वागत उनकी होने वाली जीवन संगनी द्वारा हो तो वर के लिए इस से बड़ी कोई बात हो नहीं सकती। कन्या को भी अती हर्ष होता है कि उसे यह शुभ अवसर प्राप्त हुआ है कि वर का सम्मान करें। यह कार्य, कन्या की माता वा अन्य स्त्रियों के द्वारा हो, उचित नहीं लगता।

थोड़े देर के लिये मान लीजिये कि किसी देश का राजा या प्रधान मन्त्री हमारे देश में आ रहा है। उस के स्वागत् के लिए हमारे देश के प्रधान मन्त्री को ही आगे बढ़ना चाहिए। इस से दोनों सम्मानित होते हैं। अगर हम यह कार्य किसी और से करायें तो अतिथि का अपमान होगा।

पत्नी का परम धर्म है कि जब पति कार्य के बाद घर को वापस आए तो उनका स्वागत करे। यह सुन्दर आदर्श कन्या विवाह सम्पन्न होने से पूर्व वर का स्वागत करके दर्शाती है।

एक और बात ध्यान में रखना चाहिए कि वर जिस काम के लिए आया है उसमे देर नहीं करना चाहिये। वर कन्या को वरने अर्थात् अपनाने के लिए आया है इस कारण इधर-उधर समय न बरबाद करके तुरन्त विवाह संस्कार प्रारम्भ कर देना चाहिए।

सभी वैदिक पुरोहित को सूचित किया जाता है एवं नम्र निवेदन किया जा रहा है कि इस निर्णय का आदर करें तथा अपने यज्ञमानों को उचित जानकारी देकर शुभ विवाह संस्कार करावें।

मैं अपने प्यारे पढ़ने वालों से भी नम्र निवेदन करता हूँ कि वे भी पुरोहितों को अपना सहयोग दें। विधि विधान ऋषियों का बनाया हुआ होता है। उसका सम्मान करना हर मानव का कर्त्तव्य है। आप का सहयोग वैदिक पुरोहितों के लिए अति सराहनीय होगा। हम मिलकर ही आगे बढ़ सकते हैं।

प्रधान : वैदिक पुरोहित मण्डल -आर्य प्रतिनिधि सभा फीजी